

अर्ध नारी का रहस्य



देवदत्त पटनायक



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

 **KAPWING**

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

अर्धनारी का रहस्य

देवदत्त पटनायक



प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

ISO 9001:2008 प्रकाशक



अर्धनारी का रहस्य

भगवान् निश्चल हैं, देवी गतिमान



हिंदू धर्म में भगवान् निर्गुण या सगुण हो सकते हैं। भगवान् को चाहे किसी भी रूप में दिखाया जाए, वह रूप अधूरा होगा। यदि भगवान् को पौधे के रूप में दिखाया जाए तो उसमें जानवर और खनिज का कोई अस्तित्व नहीं होगा। यदि उन्हें मानव के रूप में दिखाया जाए तो क्या वे पुरुष होंगे या नारी होंगे या दोनों का संयोग होंगे? हिंदुओं के लिए भगवान् कभी एक रूप तक सीमित नहीं रहे हैं। भगवान् की कल्पना पौधों, जानवरों, खनिजों, मानवों (नर एवं नारी) और विभिन्न प्राणियों के संयोग के रूप में की जाती है। ज्यादातर हिंदू भगवान् को तीन मानव जोड़ों के

रूप में देखते हैं—ब्रह्मा और सरस्वती, विष्णु और लक्ष्मी, शिव और शक्ति।

आकृति 3.1 में हिंदू नर त्रयी की कल्पना की गई है। ब्रह्मा सृष्टि के सृजनकर्ता हैं, विष्णु पालक हैं और शिव संहारकर्ता हैं। चार सिरों और एक ग्रंथ के साथ ब्रह्मा पुजारी की तरह लगते हैं। चार भुजाओं के साथ विष्णु राजा की तरह लगते हैं। उनके एक हाथ में शंख, दूसरे में चक्र, तीसरे में गदा और चौथे में कमल है। त्रिशूलधारी शिव तपस्वी की तरह लगते हैं।

आकृति 3.2 में हिंदू नारी त्रयी की कल्पना की गई है। लक्ष्मी, सरस्वती और शक्ति क्रमशः समृद्धि, ज्ञान एवं शक्ति की प्रतीक हैं। लक्ष्मी लाल परिधान में हैं और एक कलश लिये हुए हैं; सरस्वती सफेद परिधान में हैं और एक वीणा लिये हुए हैं; शक्ति शस्त्र लिये हैं और सिंह पर सवार हैं।

यदि कोई इन आकृतियों को ध्यान से देखेगा तो पाएगा कि नर त्रयी क्रियाओं से जुड़े हुए हैं। ये क्रियाएँ हैं सृजन, पालन और संहार। इसके विपरीत नारी त्रयी संज्ञाओं से जुड़ी हुई हैं। ये संज्ञाएँ हैं ज्ञान, धन और बल। सभी भगवान् कर्ता हैं। वे सृजन कर सकते हैं, पालन कर सकते हैं या संहार कर सकते हैं। देवियाँ निश्चेष्ट हैं। धन, ज्ञान और बल का सृजन किया जा सकता है, उनमें वृद्धि की जा सकती है या उन्हें नष्ट किया जा सकता है। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि क्या आकृति के लिंग का वास्तव में कोई अभिप्राय है? क्या हमें प्रतीक (लिंग) के रूप पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या उनके पीछे के विचारों पर?

यदि हम रूप पर ध्यान केंद्रित करते हैं और यह मान लेते हैं कि रूप व



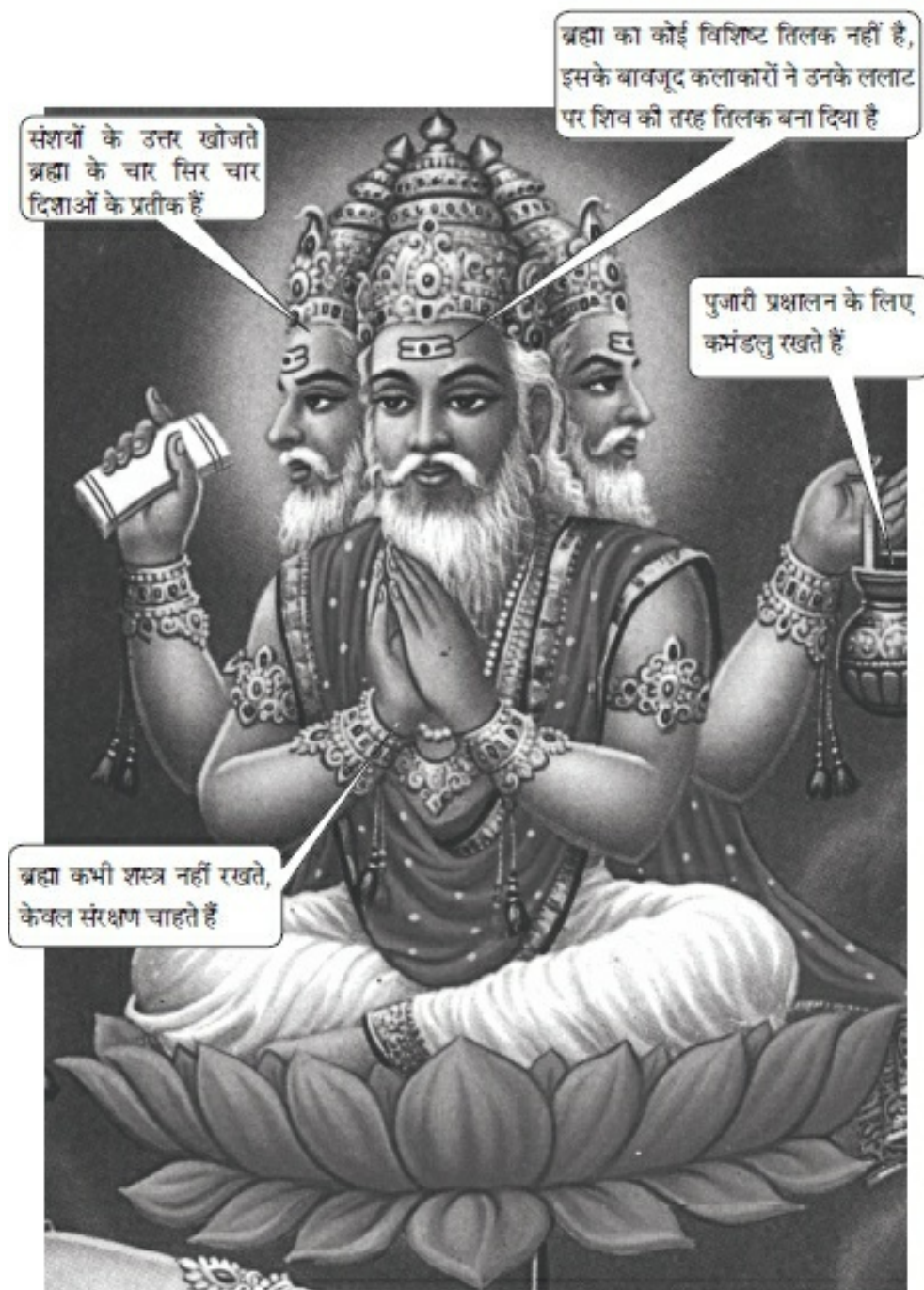
आकृति 3.2 त्रिदेवियाँ

विचार एक ही हैं तो इसका अर्थ यह है कि आकृति पितृसत्तात्मक है। यानी नर सक्रिय कर्ता हैं और नारी निश्चेष्ट वस्तु हैं। लेकिन इस तरह की व्याख्या युगल नर/नारी, बलशाली/बलहीन, शोषित/शोषक, मालिक/सेवक पर आधारित नारीवादी, पितृसत्तात्मक और समाजवादी विचारधारा को ही संतुष्ट कर सकती है।

इन आकृतियों को देखने का एक दूसरा तरीका भी हैप के पीछे के विचार पर ध्यान केंद्रित करना। जब हम ऐसा

करते हैं तो पाते हैं कि नर त्रयी व्यक्ति या प्रेक्षक का महत्त्व दर्शाते हैं। ऐसा व्यक्ति जो कर्ता है, जो हमारे भीतर की आध्यात्मिक सच्चाई को समझता है, प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। हम सृजन करते हैं, पालन करते हैं और संहार करते हैं, भले ही हम नर हों या नारी। ऐसे में नारी त्रयी प्रेक्षण के महत्त्व को दर्शाती है, जो प्रतिक्रिया के लिए उकसाता है। इस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही हमारी सृष्टि का निर्माण होता है। यह सृष्टि मन, पदार्थ, विचारों, भावों और अनुभूतियों से बनती है। भगवान् हम सबके भीतर हैं। देवियाँ हम सभी के इर्द-गिर्द हैं। हम धन, ज्ञान और बल का सृजन कर सकते हैं, उसे बनाए रख सकते हैं या नष्ट कर सकते हैं। हम धन, ज्ञान और बल का सदुपयोग या दुरुपयोग कर सकते हैं।

अगला प्रश्न यह है कि आध्यात्मिक विषय के लिए नर रूप का इस्तेमाल क्यों किया जाता है, जबकि भौतिक वस्तु के लिए नारी का इस्तेमाल किया जाता है? इसे समझने के लिए हमें भौतिक सच्चाई और आध्यात्मिक सच्चाई के बीच के अंतर को समझना होगा। भौतिक सच्चाई वह होती है, जो दिक्काल में सीमित होती है, लेकिन आध्यात्मिक सच्चाई को दिक्काल में सीमित नहीं रखा जा सकता। भौतिक सच्चाई का रूप होता है, इसलिए उसे मापा जा सकता है और एक 'कंटेनर' के भीतर रखा जा सकता है। आध्यात्मिक सच्चाई आकारहीन होती है और उसे मापा नहीं जा सकता, इसलिए उसे अंतर्विष्ट नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ, पुरुष का शरीर अपने बाहर जीवन का सृजन करता है। दूसरी तरफ, महिला के शरीर में जीवन का सृजन होता है। इसलिए नारी रूप को अधिक-से-अधिक आधान, सभी भौतिक चीजों का स्रोत कहा



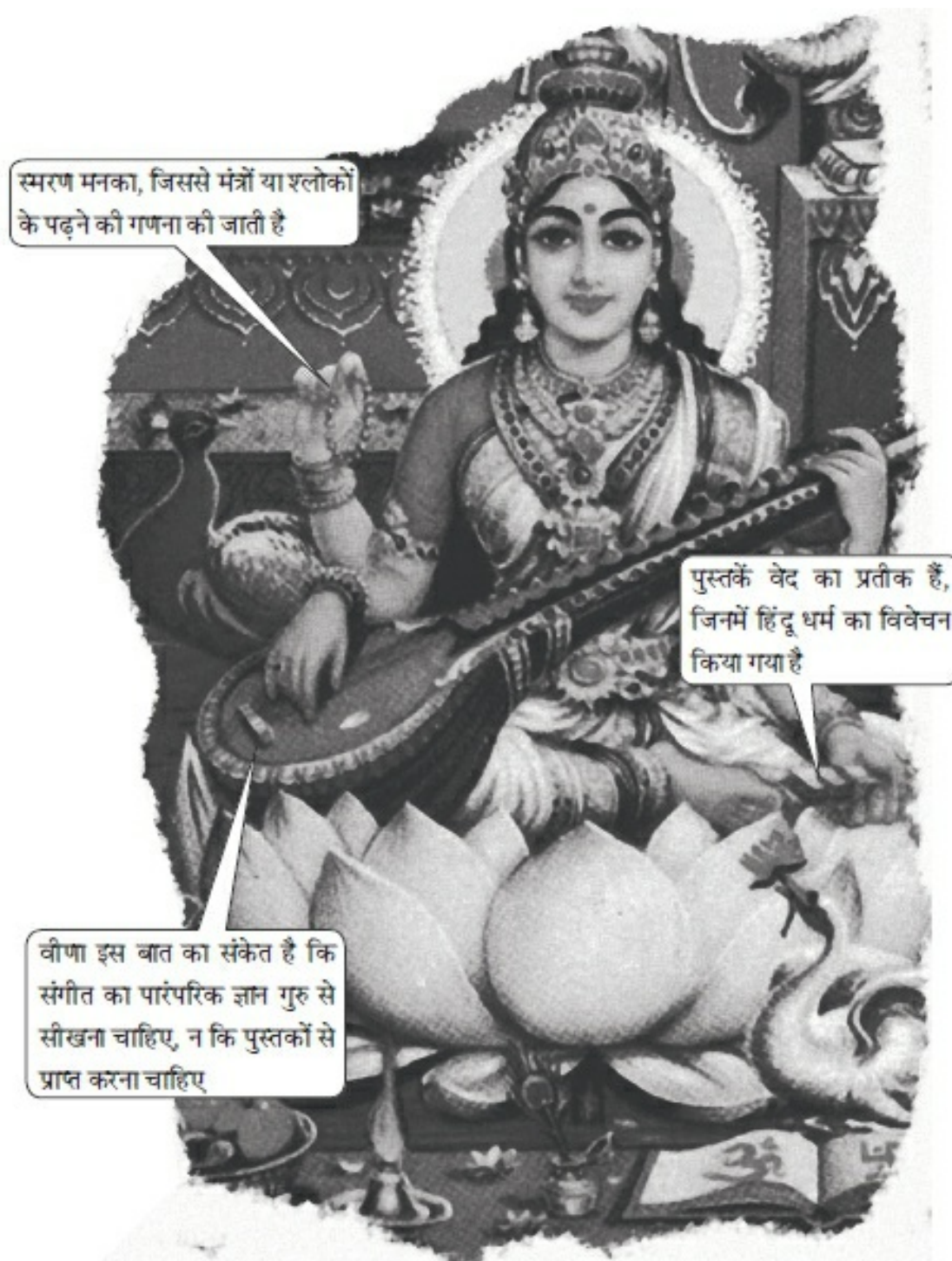
आकृति 3.3 स्रष्टा ब्रह्मा

जा सकता है। महिला भौतिक तत्त्व का प्रतीक बन जाती है और पुरुष को आध्यात्मिक तत्त्व का प्रतीक बना देती है। दुर्भाग्य से, समाज ने इन प्रतीकों के अर्थ को विकृत कर दिया है और चित्रण सच्चाई बन गई है। हमें यह कहना चाहिए कि स्त्री भौतिक तत्त्व और पुरुष आध्यात्मिक तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसके विपरीत, हम यह कहते हैं कि स्त्री भौतिक तत्त्व है और पुरुष आध्यात्मिक तत्त्व। इससे राजनीतिक और वैचारिक टकराव पैदा होता है। हमें इन विचारों को सही तरीके से व्यक्त करने और मिथक को मिथकशास्त्र से परे समझने की जरूरत है।

हमारी आत्मा या चेतना रचनात्मक (आकृति 3.3 में ब्रह्मा), पोषक (आकृति 3.5 में विष्णु) या संहारक (आकृति 3.7 में शिव) हो सकती है। मस्तिष्क और द्रव्य बौद्धिक हो सकते हैं (आकृति 3.4 में सरस्वती), आर्थिक हो सकते हैं (आकृति 3.6 में लक्ष्मी) या भावात्मक हो सकते हैं (आकृति 3.8 में शक्ति)। आध्यात्मिक यथार्थ या भगवान् को नेति-नेति के जरिए सर्वोत्तम तरीके से अभिव्यक्त किया जा सकता है। भौतिक यथार्थ या देवी को इति-इति के जरिए सर्वोत्तम तरीके से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

धन, ज्ञान और बल गरीब-अमीर, सुंदर-कुरूप, सवर्ण-निम्न वर्ण के बीच कोई भेद नहीं करते। एक कटोरा भात राजा की भी भूख मिटा सकता है और गरीब की भी। जो भी व्यक्ति, चाहे वह पुलिसकर्मी हो या चोर, ज्ञान हासिल करना चाहता है, हासिल कर सकता है। बल ऐसे व्यक्ति को मिलता है, जो उसके लायक हो। देवी भेदभाव नहीं करतीं, कोई फैसला नहीं लेतीं।

पुरुष रूप में फैसला लेने की क्षमता होती है। भगवान् समाज के सर्जक, पोषक और संहारक हैं। वे मूल्यों, नीतियों और नैतिकता के मूल स्रोत हैं। देवी को मापा जा सकता है, लेकिन मापक और मापदंड के सर्जक, पोषक और संहारक भगवान् हैं। 'माप' के लिए संस्कृत शब्द माया है इसीलिए देवी को महामाया कहा जाता है। महामाया का अर्थ है, जिसे मापा जा सकता है और जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है। देवी पदार्थ हैं, ऊर्जा हैं। जो उनका प्रेक्षक है, वह विभिन्न रूपों में उनका सृजन करता है, पोषण करता है या संहार करता है।



आकृति 3.4 ज्ञान की देवी सरस्वती

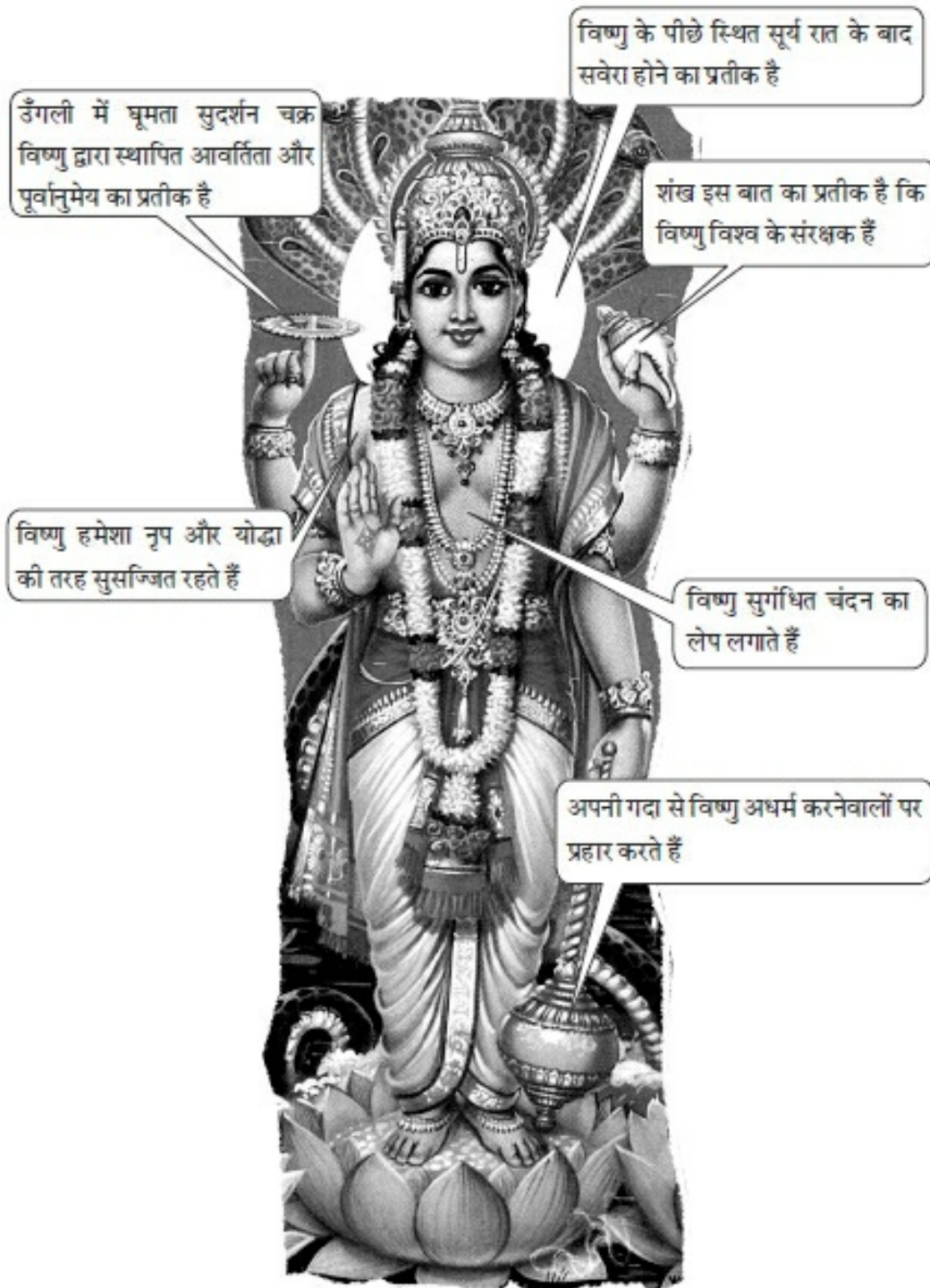
नारायण जब जागते हैं, देवी की अनुभूति इंद्रियों के जरिए की जाती है। शब्दों के इस्तेमाल के जरिए उनका वर्गीकरण किया जाता है, विचारों में उन्हें बाँधा जाता है और मापदंड से उन्हें मापा जाता है। अचानक ही उनका मूल्यांकन किया जाता है। उनके रूप, उनके नाम और उनका मूल्यांकन हमें वशीभूत कर लेते हैं, फाँस लेते हैं, सम्मोहित कर देते हैं, हमारे मनोभावों को आलोडित कर देते हैं, हमें सुखी बना देते हैं और हमें उदास कर देते हैं;

क्योंकि वे कभी स्थिर नहीं होते। यही वजह है कि बदलते रूपों की इस भौतिक दुनिया को प्रायः माया कहा जाता है। माया का हम महज अनुभव करते हैं। वह बदलती रहती है और हम उसपर नियंत्रण के लिए संघर्ष करते रहते हैं, उसे स्थायी बनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं; लेकिन हम अपनी कोशिश में विफल रहते हैं, क्योंकि परिवर्तनशीलता उसकी प्रकृति है।

देवी का अनुभव करने से हम उस चीज की प्रशंसा करते हैं, जो नहीं बदलती और वह चीज है हमारे भीतर का भगवान्, जो स्थिर, निरभ्र, मूक आत्मा होता है। चूँकि हम माया की चंचलता का अनुभव करते हैं, इसलिए हम माया के बारे में महसूस करते हैं, जो मोहिनी का नृत्य देखती रहती है। चूँकि हम प्रकृति को जीवन निगलते-उगलते हुए महसूस करते हैं, इसलिए हम जीवन के खेल के मूक प्रत्यक्षदर्शी पुरुष को पाने की कामना करते हैं।

उपनिषदों में, जिनकी रचना 500 ईसा पूर्व हुई थी, इन दो सच्चाइयों का बार-बार जिक्र आता है सच्चाई जो बदलती है और सच्चाई जो नहीं बदलती है। एक का अस्तित्व दूसरे के अस्तित्व की ओर संकेत करता है। परिवर्तन में हम स्थायित्व खोजते हैं, चंचलता में हम निश्चलता खोजते हैं, गति में हम जड़ता खोजते हैं। आवाज में हम खामोशी खोजते हैं। दो अनुपूरक सच्चाइयों का विचार हमें इतिहास और भूगोल के जरिए पौधों, पशुओं, ज्यामिति और मानव के तमाम प्रतीकों तक पहुँचा देता है।

सभी पौधे विकसित होते हैं और समय के साथ बदलते हैं, लेकिन कुछ पौधे अन्य की तुलना में तेजी से विकसित होते हैं और तेजी से बदलते हैं। एक तरफ तो बरगद का पेड़ है, जिसका जीवन लंबा होता है। वह छाया मुहैया तो



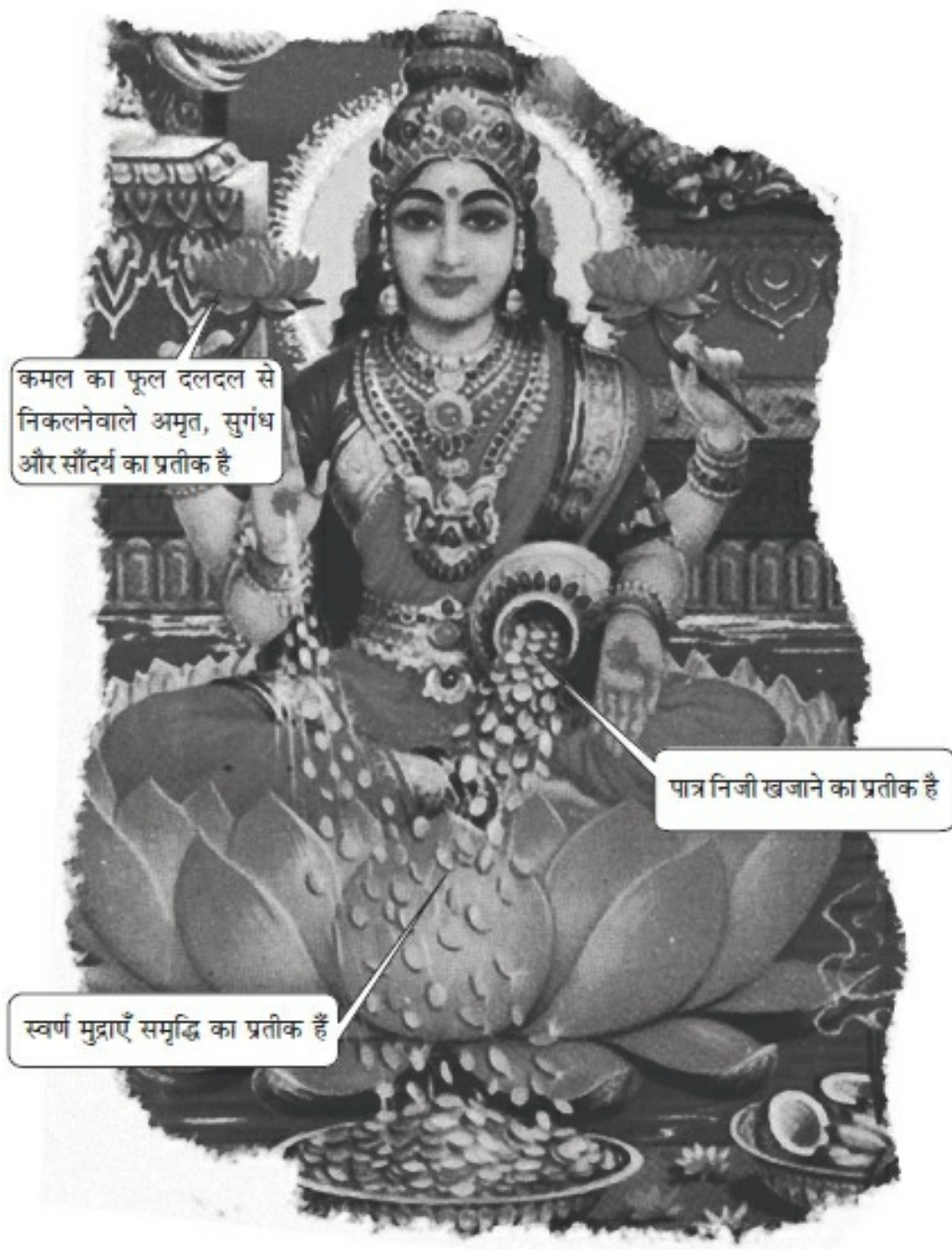
आकृति 3.5 विश्व के संरक्षक विष्णु

कराता है, लेकिन मानव जाति का पेट नहीं भरता। दूसरी तरफ घास और अनाज हैं, जिनका जीवन छोटा होता है। वे छाया तो नहीं देते, लेकिन भोजन मुहैया कराते हैं। पहला अपरिवर्तनशील सच्चाई का प्रतीक है जब जीवन असह्य हो जाता है तो यह हमें आध्यात्मिक छाया देता है, लेकिन यह जीवन के सृजन और पोषण में असमर्थ होता है। दूसरा परिवर्तनशील सच्चाई का प्रतीक है। यह शरीर का पोषण करता है, लेकिन स्थायित्व या स्थिरता का बोध

नहीं कराता। जन्म और शादी से संबंधित हिंदू अनुष्ठानों में तृण, अनाज और केले के पेड़ को बहुत महत्त्व दिया गया है; लेकिन इन अनुष्ठानों में बरगद के पेड़ या उसके पत्ते का कोई चिह्न नहीं होता। परिवार के ढाँचे के बाहर केवल तपस्वी ही उसे महत्त्व देते हैं।

जंतुओं की दुनिया में निश्चल आध्यात्मिक आत्मा और गतिमान भौतिक दुनिया का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व कोबरा करता है। सभी जंतु चलते हैं, लेकिन केवल कोबरा में गतिशीलता और निश्चलता के बीच भेद किया जाता है। कोबरा जब निश्चल होता है, कुंडली मारकर अपना फण उठा लेता है। मैथुन के लिए नर और मादा दोनों को लगातार गतिशील रहना पड़ता है। इस तरह फण काढ़ा हुआ कोबरा जो तपस्यालीन शिव या निद्रित नारायण से संबद्ध है अपरिवर्तनशील पारलौकिक सच्चाई का प्रतीक है। दूसरी तरफ, मैथुनरत सर्प परिवर्तनशील लौकिक सच्चाई से संबद्ध उर्वरता का प्रतीक है।

खनिज की दुनिया में निश्चलता का प्रतीक भस्म और बर्फ हैं। किसी चीज को जलाने या नष्ट करने से भस्म का सृजन होता है; लेकिन भस्म को और अधिक नष्ट नहीं किया जा सकता। इस तरह यह स्थायित्व अपरिवर्तनशील सच्चाई, आत्मा का प्रतीक है। बर्फ पानी होता है, जो शांत रहता है। भस्म और बर्फ दोनों को तपस्वी शिव से संबद्ध किया जाता है, जो शांति से हिमालय पर बैठे रहते हैं। यदि बर्फ शांत जल है तो नदी बहता हुआ पानी, जिसका सर्वोत्तम प्रतीक परिवर्तनशील सच्चाई, अस्थायी दुनिया है। कोई भी व्यक्ति एक नदी में दो बार कदम नहीं रख सकता, क्योंकि विद्वानों का कहना है कि वह हमेशा बदलती रहती है। शिव आवेश से बहती हुई गंगा नदी



आकृति 3.6 धन की देवी लक्ष्मी

को अपनी जटा में समेटकर शांत कर देते हैं, क्योंकि उसके पास दुनिया को बहा ले जाने की शक्ति है।

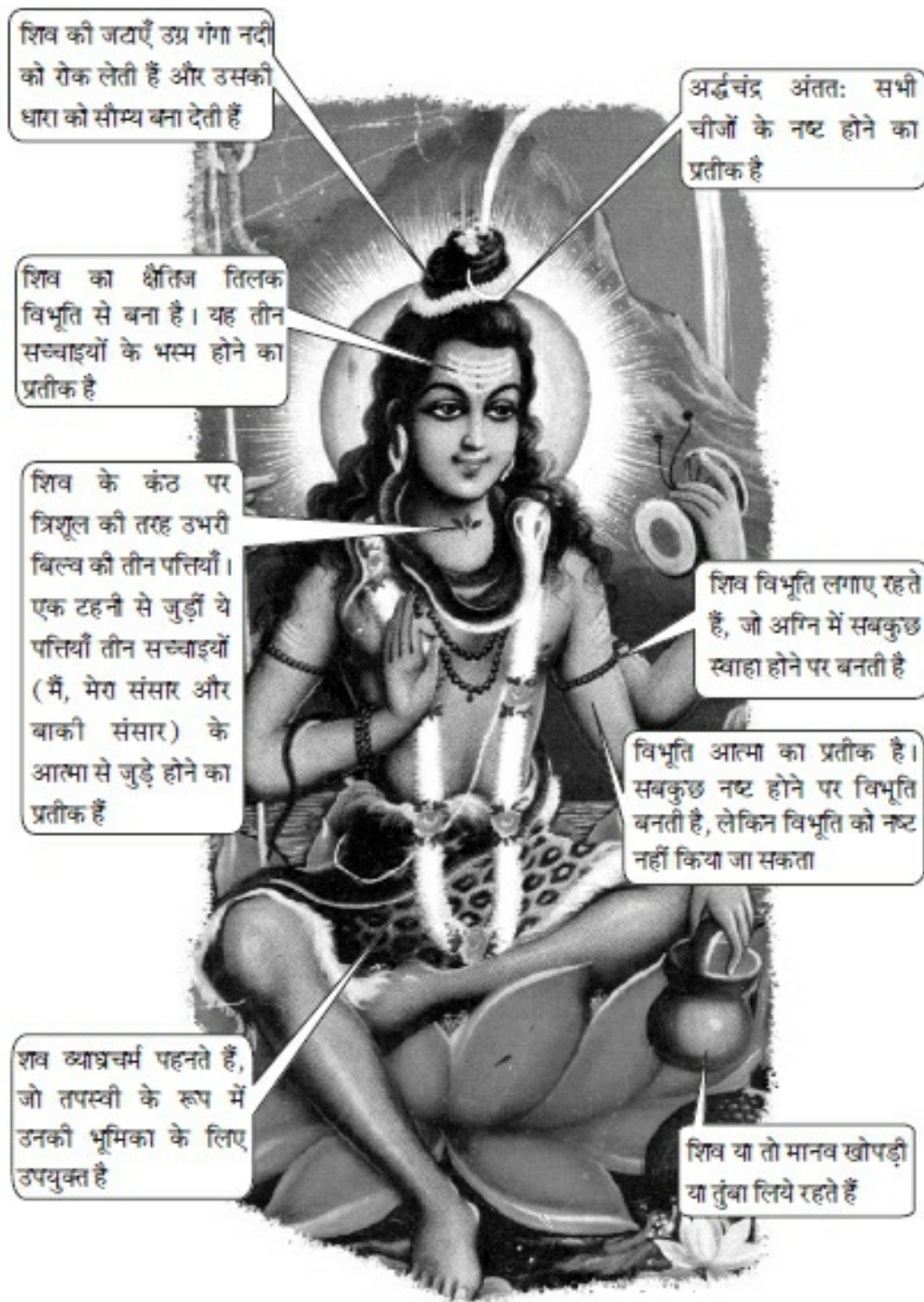
ज्यामिति में त्रिकोणों का इस्तेमाल स्थिरता और गतिशीलता दोनों को दर्शाने के लिए किया जाता है। ऊर्ध्वाकार शीर्षवाले त्रिकोण का इस्तेमाल स्थायित्व दर्शाने के लिए किया जाता है। इसी तरह अधोमुखी शीर्षवाले त्रिकोण का इस्तेमाल गतिशीलता दर्शाने के लिए किया जाता है। इसे आकृति 4.16 में अच्छी तरह दर्शाया गया है। रंगों में, सफेद स्थिरता का प्रतीक है, क्योंकि यह स्पेक्ट्रम के सभी रंगों को परावर्तित करता है। ज्ञान की देवी सरस्वती (आकृति 3.4) सफेद परिधान पहनती हैं। काला गतिशीलता का रंग है, क्योंकि यह सभी रंगों को अपने में समाहित

कर लेता है। लाल संभावित ऊर्जा और हरा प्राप्त ऊर्जा का रंग है। बारिश से ठीक पहले धरती लाल हो जाती है। उस समय उसमें बोए हुए बीज होते हैं। बारिश के बाद धरती हरी हो जाती है। उस समय बीज में जीवन पड़ जाता है और वह फूटकर बाहर निकल आता है। अब लक्ष्मी और दुर्गा पर आएँ। लक्ष्मी (आकृति 3.6) और दुर्गा (आकृति 3.8) लाल रंग के परिधान पहनती हैं, जबकि अन्नपूर्णा (आकृति 1.14) का परिधान हरा है।

अंतरिक्ष में ध्रुव तारा स्थिर है, इसलिए उत्तर दिशा को स्थिरता, प्रज्ञा और अमरता का प्रतीक माना गया। इसी तरह दक्षिण दिशा को परिवर्तन और मृत्यु से जोड़ दिया गया।

शरीर में बायाँ पार्श्व परिवर्तन का प्रतीक है, क्योंकि हमारे स्थिर रहने पर भी हृदय धड़कता रहता है। इसके विपरीत दायाँ पार्श्व स्थिर होता है, इसलिए वह आत्मा का प्रतीक है। चूँकि परिवर्तन अवांछित होता है, इसलिए बायाँ पार्श्व शरीर का अशुभ अंग बन गया। इसके विपरीत स्थिर दायाँ पार्श्व शरीर का शुभ अंग बन गया।

मनुष्यों के बीच, ब्रह्मचारी तपस्वी स्थिर आत्मा का प्रतीक है, जबकि नृत्य करती अप्सरा गतिशील दुनिया का प्रतिनिधित्व करती है। तपस्वी और अप्सरा के बीच निरंतर द्वंद्व चलता रहता है। इसके बावजूद तपस्वी और अप्सरा के बीच



आकृति 3.7 संहारकर्ता शिव

संयोग होने से ही जीवन का सृजन होता है। इस तरह जीवन परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील सच्चाई का मिश्रण है। आकृति 3.9 अपरिवर्तनशील सच्चाई (बाईं तरफ के तपस्वी) और परिवर्तनशील सच्चाई (दाईं तरफ की अप्सरा) के संयोग को दर्शाती है।

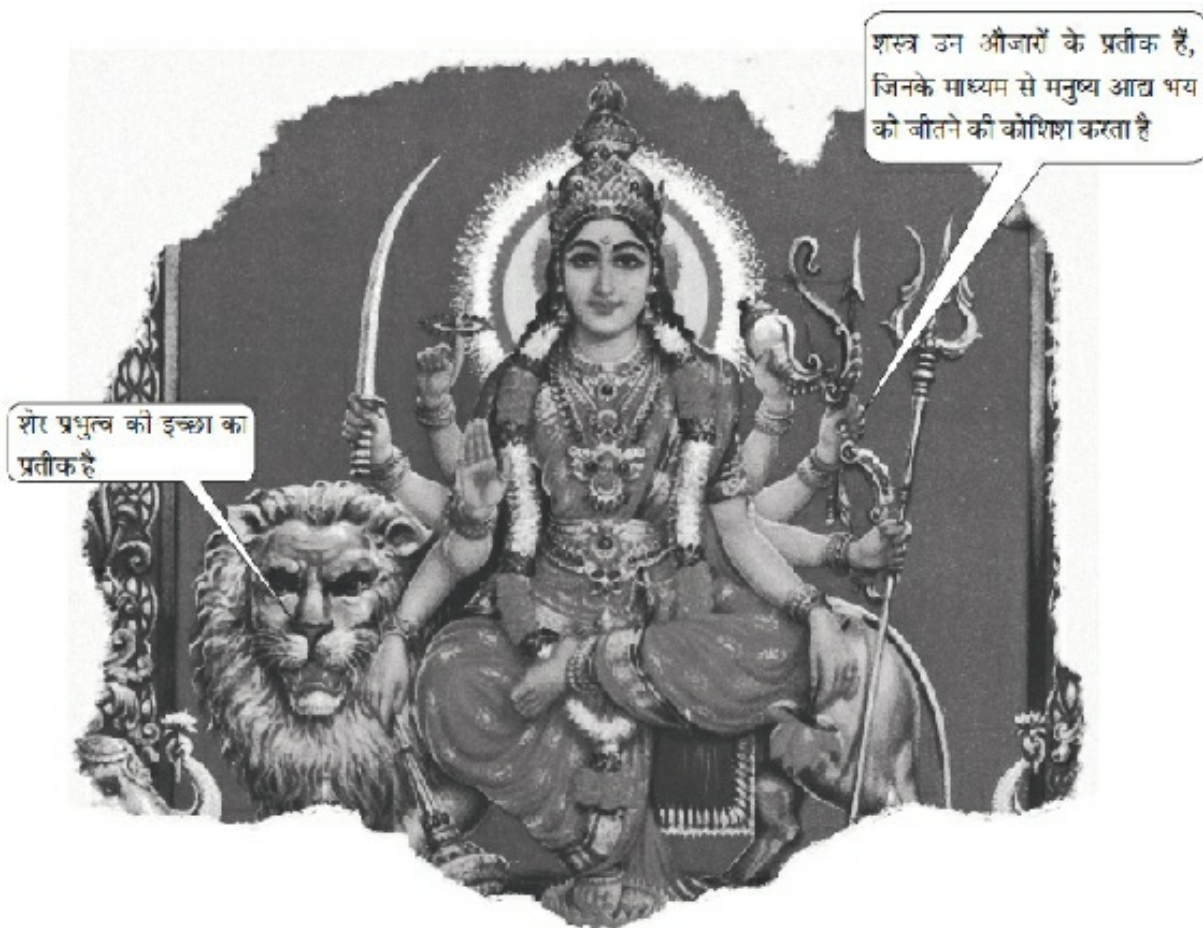
आकृति 3.9 में दिखाए गए अर्धनारीश्वर या भगवान् बहुत लोकप्रिय हैं। इस आकृति को देखकर मनोविश्लेषकों

ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत महत्त्व दिया जाता था। नारी देवत्व का अंग थी। दुनिया की संभवतः किसी भी संस्कृति में नारी रूप को देवत्व का अंग नहीं माना जाता था। भारतीय संस्कृति को छोड़ अन्य संस्कृतियों में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना तक नहीं की गई है। आकृति को देखकर इस बात की सहज ही कल्पना की जा सकती है कि भारत में लैंगिक द्विधार्म्यता को बहुत सहजता से लिया जाता था, यानी नारी में पुरुष और पुरुष में नारी का रूप देखा जाता था; लेकिन ये कल्पनाएँ हैं, जो समाज की सच्चाई के बारे में नहीं बतातीं। हाँ, भारतीय संस्कृति में अस्पष्ट लैंगिकतावाले पुरुषों, यानी हिजड़ों को स्थान जरूर दिया गया है; लेकिन वे समाज के हाशिए पर रहते हैं।

दुर्भाग्य से, हम ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहाँ लोग विचार की बजाय रूप पर ध्यान देते हैं। हम यह मान लेते हैं कि प्रतिरूप ही यथार्थ है और अर्द्धनारीश्वर को अर्द्धनारी भगवान् के रूप में देखते हैं। हमारी यह धारणा सही नहीं है। दरअसल, ईश्वर आधा भौतिक तत्त्व और आधा आत्मा का संयोग है।

प्रतीकात्मक भाषा में अर्द्ध नर आकारहीन ईश्वर का प्रतीक है, जिसे वेदों में पुरुष, 'विष्णुपुराण' में नारायण और 'शिवपुराण' में शिव कहा गया है। अर्द्ध नारी ईश्वर के सगुण रूप (पुरुष, नारी और नपुंसक रूपों) का प्रतिनिधित्व करती है। नारी रूप को वेदों में प्रकृति, 'विष्णुपुराण' में माया और 'शिवपुराण' में शक्ति कहा गया है।

यह आकृति दिलचस्प है, क्योंकि उसमें एक अर्द्ध नारी ईश्वर है, न कि अर्द्ध पुरुष देवी। धर्मग्रंथों में अर्द्ध पुरुष देवी का कोई जिक्र नहीं है। इस तरह प्रत्यक्ष ईश्वर के समष्टि रूप में एक लैंगिक शक्ति प्रधान है। यह योगी शिव का रूप है।



आकृति 3.8 बल, प्रेम और भावों की देवी शक्ति

कहानी इस तरह है शिव के भक्त भृंगि शिव की परिक्रमा करना चाहते थे, लेकिन उनकी पत्नी पार्वती की नहीं। पार्वती ने भृंगि को शिव की परिक्रमा करने की अनुमति नहीं दी। वे शिव की गोद में बैठ गई, ताकि ऋषि उनके बीच से न गुजर सकें। जब भृंगि ने उनके सिर के बीच से गुजरने के लिए मधुमक्खी का रूप धारण कर लिया तो पार्वती ने अपने को शिव में समाहित कर लिया। इस तरह वे शिव का बायाँ आधा अंग बन गईं। अब भृंगि ने उनके बीच से अपना रास्ता बनाने के लिए कीड़े का रूप धारण कर लिया। पार्वती इससे विस्मित नहीं हुईं। उन्होंने भृंगि को श्राप दिया कि उनके शरीर का हर अंग अलग हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप भृंगि के शरीर में न तो मांस बचा और न रक्त। वे कंकाल बन गए और सीधे खड़े नहीं हो सकते थे। शिव ने उन पर दया करते हुए उन्हें तीसरा पैर दे दिया, ताकि वे त्रिपादिका की तरह खड़े रह सकें। यह कहानी हर व्यक्ति को याद दिलाती है कि यदि पुरुष ईश्वर के अर्द्धनारी हिस्से का सम्मान नहीं करेगा तो उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। यह दक्षिण भारत के एक तमिल मंदिर की जनश्रुति है।

इस आकृति की एक दूसरी कहानी उत्तर भारत के हिमालयीय क्षेत्र से निकली है। जब पार्वती ने शिव की जटा में गंगा को देखा तो कुपित हो गईं। उन्होंने सोचा कि जब वे अपने पति की गोद में बैठी हैं तो शिव अपने सिर पर दूसरी स्त्री को कैसे बैठा सकते हैं। पार्वती को शांत करने के लिए शिव ने अपने शरीर को अपनी पत्नी के शरीर में मिला लिया।

आकृति में ईश्वर अकेले क्यों हैं? दरअसल, आकृति यह बताती है कि शिव पार्वती के बिना अधूरे हैं। इसका अर्थ यह है कि आध्यात्मिक सच्चाई भौतिक सच्चाई के बिना अधूरी है। लोगों से कहा जाता है कि उन्हें आध्यात्मिक सच्चाई (शिव) की पूजा करनी चाहिए, क्योंकि सभी भौतिक चीजें (शक्ति) हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। हमारी प्रवृत्ति भौतिक चीजों की उपेक्षा करने की है। हम विषयासक्ति और प्रलोभन की भर्त्सना करते हैं; लेकिन आकृति में देवी को समुचित सम्मान दिया गया है। इस तरह आकृति हमें यह याद दिलाने की कोशिश कर रही है कि अकेले भौतिक तत्त्व के जरिए



आकृति 3.9 अर्धनारी

आध्यात्मिक तत्त्व को हासिल किया जा सकता है। हमारे जीवन में आज भौतिक चीजों का बहुत मूल्य है; लेकिन पवित्र आकृति में भौतिक अर्द्ध को अशुभ माने जानेवाले वाम पार्श्व में जगह देकर उसके मूल्य को गौण बना दिया गया है।

आकृति दर आकृति हम आकृतियों के बाएँ और दाएँ पार्श्व के बीच निरंतर संवाद पाएँगे। यह दरअसल तत्त्व के भौतिक अर्द्ध और आध्यात्मिक अर्द्ध के बीच का संवाद है। गणेश (आकृति 1.17) को हमेशा उनके बाएँ अर्द्ध की तरफ मुड़ी हुई सूँड़ के साथ दिखाया जाएगा। शिव (आकृति 4.13) को हमेशा अपने दाएँ पैर पर खड़ा दिखाया जाएगा और विष्णु को कृष्ण के रूप में हमेशा अपने दाएँ पैर के अँगूठे को चूसते हुए (आकृति 2.7) या दाएँ पैर को बाएँ पैर पर रखे हुए (आकृति 6.21) दिखाया जाएगा। ये आकृतियाँ हमें याद दिलाती हैं कि हमारा जीवन



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**



KAPWING

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

Novels English & Hind

आत्मा और परमात्मास, ईश्वर और देवी के बीच लगातर चलनेवाला संवाद है। किसी भी एक के बिना संवाद अधूरा है।

□□□